νίσσομαι, νῖ-σομαι; lith. *neszu*; slav. *nesû* fero, adjectâ sibilante, cf. fut. नेष्यामि·)

c. अनु 1) propitiare, reconciliare, placare. Ragh. 5.54.: क्रुद्धो मया ऽनुनीतः प्रणतेन; 19.38.: पराङ्मुखीर् ना ऽनुनेतुम् अबलाः स तत्वरे; 19.43.: अन्वनैषुर् अवधूतविग्रहास् तन् दुरुत्सहवियोगम् अङ्गनाः; Lass. 45.: तां सुकोमलवचनैर् अनुनीय· — अनुनीत jucundus, gratus. Ur. 51.7. 2) rogare, supplicare. R. Schl. I. 8. 20.: न गच्छेम ऋषेर् भीता अनुनेष्यन्ति तन् नृपम्· 3) suadere. Mah. 1.3528.: भवतो ऽनुनयाम्य् एवम् पुत्र् राज्ये ऽभिषिच्यताम्; Ram. II. 47.46.: अनुनीता ऽस्मि रामेण· 4) dare, tradere. Mah. 1.6481.: अनुनेष्याम्य् अहम् विद्यां स्वयन् तुभ्यम्·

c. अनु praef. प्रति recusare, *c. acc. pers.* Mah. 1.776.: एतत् प्रत्यनुनये भवन्ताव् अश्विनौ·

c. अप abducere, removere. H. 4.33.: अपनेतुञ्च यतितो नचै 'व शकितो मया; R. Schl. II. 83.9.: दृष्ट एव हि नः शोकम् अपनेष्यति राघवः· Abjicere. Ragh. 4.64.: अपनीतशिरस्त्राणाः शेषास् तं शरणं ययुः·

c. अप praef. वि *id.* Mah. 1.6017. R. Schl. II. 10.37.

c. अभि adducere. Rigv. 42.8.: अभि सूयवसन् (सुयवसम्) नय (नः) «bono gramine insignem *ad locum* duc *nos*»; Mah. 3.769.: शरो ऽश्याम् अभिनीयमानः·

c. आ 1) adducere. H. 2.12. N. 16.3. 2) afferre, apportare. N. 20.4.: एनम् मे पटम् आनयताम् इह; Sa. 5.78.: अग्निम् आनयित्वे 'ह (pro आनीय)· *Caus.* adducendum curare. In. 5.54.: आनाय्य तनयम्; N. 8.11.: सूतम् आनाययामास पुरुषैर् आप्तकारिभिः· R. Schl. I. 4.25. Ragh. 12.12. Mah. 1.2974. — आनापयितुम् pro आनाययितुम्, R. Schl. II. 14.21. (*v. simpl.*)

c. आ praef. सम् + अभि adducere. Mah. 3.10656.: वन्दिं समभ्यानय मत्सकाशम्·

c. आ praef. उप afferre, apportare. R. Schl. I. 19.22.: अन्नम् उपानीतम्; M. 10.

c. आ praef. सम् + उप adducere, congregare. Mah. 1.7460.: मत्वाय समुपानीतास् ते·

c. आ praef. परि circumducere. Mah. 2.2685.: को नु ताम् ... सभामध्ये पर्यानयेत्·

c. आ praef. प्रति reducere. Mah. 2.2475.: तूर्णम् प्रत्यानयस्वै 'तान्·

c. आ praef. सम् 1) adducere. Sa. 6.6. N. 18.17. 2) afferre, apportare. Su. 4.7.: समानीतेषु तत्र वै वरासनेषु· 3) congregare. Su. 3.13. et 18.

c. उत् sursum ducere. Mah. 1.3103.: पुत्र उन्नयति यमक्षयात्·

c. उप 1) adducere. N. 26.35.: दमयन्तीम् उपानयत् (nisi hoc compositum ex उप + आ + अनयत्· 2) afferre, offerre. Man. 3.228.: उपनीय तु तत् सर्वम्; Mr. 275.20.: आर्यस्या ''सनम् उपनय; Ragh. 10.53.: उपनीतन् तद् अन्नम् प्रत्यग्रहीन् नृपः; R. Schl. II. 54.: उपानयत धर्मात्मा गाम् अर्घ्यम् उदकन् तथा· 3) *Atm.* sacro filo cingere. Man. 2.69.: उपनीय गुरुः शिष्यम्; 2.140.: उपनीय तु यः शिष्यम् वेदम् अध्यापयेद् द्विजः; Ragh. 3.29.: उपनीतम् ... विनिन्युर् एनङ् गुरवो गुरुप्रियम्·

c. निस् 1) educere. Hit. 73.22.: किम् वा दुर्जनचेष्टितन् न वा इत्य् एतद् व्यवहारान् निर्णेतुन् न शक्यते· 2) exquirere, invenire, explorare, cognoscere, *herausbringen* (v. निर्णय)· Hit. 101.16.: पुरावृत्तकथोद्गारैः कथन् निर्णीयते परः; 94.9.: निर्णीय शुभलग्नम्·

c. परा abducere, asportare, auferre. Mr. 315.1. *infr.*: पराणयामि एतं लघुम्·

c. परि 1) circumducere. अग्निम् परिणेतुम् circum ignem ducere *alquam matrimonii causâ*. R. Schl. II. 42.8.: अगृह्णां यच्च ते पाणिम् अग्निम् पर्यणयञ्च यत्· 2) uxorem ducere in matrimonium. Br. 1.26.: मन्त्रवत् परिणीय; Hit. 63.1.: एनाङ् गन्धर्वविवाहेन परिणयतु भवान्· 3) explorare, cognoscere. Man. 7.122.: तेषाम् वृत्तम् परिणयेत् सम्यग् राष्ट्रेषु तच्चरैः· (*v.* निर्णी·)

c. प्र 1) producere, proferre, afferre. Ragh. 14.67.: धर्मो मनुना प्रणीतः· — दण्डम् प्रणेतुम् punire, castigare,